विषय- संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र

दशकुमारचरितम

कवि दण्डी का स्थिति काल :-

महाकवि दण्डी का स्थितिकाल अधिकांश आलोचकों तथा विद्वानों द्वारा सप्तम शताब्दी स्वीकार किया गया है, किन्तु इस विषय में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। सिंघली भाषा के अलंकार ग्रन्थ 'सियन्वस-लकर' की रचना महाकवि दण्डी के 'काव्यादर्श' के आधार पर की गई है। इस ग्रन्थ के रचयिता राजसेन प्रथम का समय 826-866 ई० था। इसी तरह, कन्नड़ भाषा के अलंकार ग्रन्थ 'कविराजमार्ग' में भी 'काव्यादर्श' की छाप पर्याप्त रूप से दृष्टिगोचर होती है। इस ग्रन्थ के लेखक अमोघवर्ष का समय 814 अथवा 815 ई० के लगभग माना गया है। अतः दण्डी के 'काव्यादर्श' की रचना अष्टम शताब्दी के अन्त तक अवश्य हो चुकी होगी। इस आधार पर दण्डी के काल की अन्तिम सीमा अष्टम शताब्दी का अन्त स्वीकार किया गया है।

'काव्यादर्श' के कुछ पद्यों में कालिदास का प्रभाव स्पष्ट रूप से उपलब्ध होता है। अतः दण्डी का कालिदास के पश्चात् होना निश्चित है। इसके अतिरिक्त राजा प्रवरसेन विरचित 'सेतुबन्ध' नामक प्राकृत-काव्य का उल्लेख भी 'काव्यादर्श' में उपलब्ध होता है।

IND CamScanner App

classmate
Date
Page

राजा प्रवरसेन का पंचम शताब्दी में होना निश्चित है। अतः दण्डी का स्थितिकाल 500-800 ई० के मध्य ही स्वीकार किया जाना अधिक समीचीन प्रतीत होता है। यहाँ यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि दण्डी महाकवि बाण के पश्चात् हुए अथवा पहले ? इस बारे में भी विद्वानों में मतभेद है। याकोबी तथा पीटरसन की दृष्टि में 'कादम्बरी' में वर्णित शुकनासोपदेश की छाया 'काव्यादर्श' के एक पद्य में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। इसके अतिरिक्त दण्डी ने महाकवि बाण और मयूर की प्रशंसा भी की है। तीसरी बात यह है कि 'अवन्तिसुन्दरीकथा' में कादम्बरी का वर्णन बाण की प्रसिद्ध कथा से मिलता-जुलता है। अतः उक्त स्थिति में महाकवि दण्डी का बाण के पश्चात् सप्तम शताब्दी के उत्तरार्द्ध में होना निश्चित हो जाता है। डॉ० बेलवेल्कर ने भी दण्डी का यही समय स्वीकार किया है।

इसके विरुद्ध दण्डी का काल सप्तम शताब्दी का पूर्वार्द्ध मानने वाले विद्वानों का कथन यह है कि "शैली की दृष्टि से दण्डी बाण के पूर्ववर्ती ज्ञात होते हैं।" यदि दण्डी बाण के पश्चात् हुए होते तो दण्डी के ग्रन्थों की लेखन शैली पर बाण का प्रभाव अवश्य पड़ा होता, किन्तु 'दशकुमारचरित' की सरल तथा प्रासादिक शैली पर बाणभट्ट की प्रौढ़ तथा

IND CamScanner App

आलंकारिक शैली का कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है। इसके अतिरिक्त "दशकुमारचरित" का भौगोलिक और राजनीतिक चित्रण हर्षवर्धन के पूर्व के भारत की ओर ही संकेत करता है, अतः इस आधार पर भी दण्डी का स्थितिकाल सप्तम शताब्दी का पूर्वार्द्ध ही मानना उचित प्रतीत होता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर महाकवि दण्डी का सप्तम शताब्दी में होना सिद्ध होता है। किन्तु यह विवादग्रस्त है कि शताब्दी का पूर्वार्द्ध काल माना जाये अथवा उत्तरार्द्ध ? यदि 'काव्यादर्श' में उल्लिखित राजवर्मा को नरसिंह वर्मा द्वितीय (जिसका नाम राजवर्मा था) मान लिया जाये तो दण्डी के काल ~~के~~ के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार का सन्देह किये जाने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता है। प्रो॰ आर॰ नरसिंहाचार्य तथा डॉ॰ बेलवेलकर ने भी इन दोनों की एकता स्वीकार कर दण्डी का काल सप्तम शताब्दी का उत्तरार्द्ध ही सिद्ध किया है। शैवधर्मोपासक पल्लवराज 'नरसिंह वर्मा' का समय 690-715 ई॰ माना गया है तथा दण्डी इनके सभाकवि थे, अतः इनका समय सप्तम शताब्दी का उत्तरार्द्ध माना जाना स्वयं ही सिद्ध हो जाता है। किन्तु उपर्युक्त राजवर्मा तथा नरसिंह वर्मा द्वितीय - इन दोनों के एक होने का सुदृढ़ प्रमाण अभी तक प्राप्त नहीं किया जा सका है। इति।

IND CamScanner App